Tonnies, Ferdinand

फॅरदिनॉ टॉनीज़ (1855-1936)

जर्मन समाजशास्त्री फॅरदिनॉ टॉनीज 'जर्मन समाजशास्त्रीय परिषद्' के संस्थापक पिता माने जाते हैं। वे मुख्यतः समुदाय (गैमिनशाफ्ट) और समाज (गैसेलशाफ्ट) के बीच में किये गये अन्तर तथा 'स्वरूपवादी समाजशास्त्र' संबंधी अपने विचारों के लिये जाने जाते हैं। उनका

Scanned with CamScanner

समुदाय और समाज संबंधी भेद वास्तव में, विभिन्न प्रकार के सम्बंधों पर आधारित है जो लघु स्तरीय और वृहत स्तरीय समाजों की एक अनुमानित विशेषता है। उनके अनुसार, **ऐसे समाज जो साझा संस्कृति और जीवन शैली पर आधारित हैं तथा मुख्यतः पारम्परिक बंधनों द्वारा बंधे होते हैं, उन्हें समुदाय (गैमिनशाफ्ट) कहते हैं।** गैमिनशाफ्ट में, जनसंख्या में अधिकांशतः गतिहीनता के साथ-साथ प्रस्थिति जन्मजात होती है। ऐसे समाजों में आस्थाओं, भावनाओं और सहयोगी सम्बंधों के विकास में परिवार और धार्मिक समूहों (चर्च) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। ऐसे सम्बंधों के दर्शन गांव और छोटे समुदायों में किये जा सकते हैं। किन्तु जैसे-जैसे इन समाजों में श्रम-विभाजन अधिकाधिक जटिल होता जाता है, ये सम्बंध अनुबंधात्मक और अवैयक्तिक सम्बंधों में बदलते जाते हैं और इन्हीं के आधार पर गैशलशाफ्ट सामाजिक सम्बंधों को प्रदर्शित करने वाले विशाल संगठनों (समितियों) और नगरों का विकास होता जाता है। **गैशलशाफ्ट (समाज) समितियों और संघों पर आधारित होते हैं जो भिन्नताओं के आधार पर बंधे होते हैं।** भिन्नताओं को जटिल श्रम विभाजन और अन्तर्पारस्परिकता द्वारा पाटा जाता है। टॉनीज़ ने आधुनिक नगरीय समाज जो गैशलशाफ्टीय सम्बंधों (अलगावपन और निर्वेयक्तिता) पर आधारित होते हैं, में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिवादिता के प्रभुत्व और निरंतर किन्तु तीव्र गति से कमजोर होती हुई सामुदायिक भावना पर गहरे आंसू बहाये हैं। इसी कारण टॉनीज़ को उपयोगितावाद के कटु आलोचक के साथ-साथ निराशावादी और रूढ़िवादी विचारक माना जाता है। टॉनीज़ का गैमिनशाफ्ट और गैशेलशाफ्ट का भेद दुर्खाइम के यांत्रिक और सावयविक एकजुटता के भेद से मिलता-जुलता है। इसकी लगभग वे ही कमजोरियां हैं जो दुर्खाइम के द्विभाजन में देखने को मिलती हैं।

टॉनीज़ ने **समाजशास्त्र को तीन प्रमुख शाखाओं** में बाँटा है—**शुद्ध या सैद्धान्तिक, व्यावहारिक और अनुभवपरक**। समुदाय और समाज (गैमिनशाफ्ट और गैशेलशाफ्ट) का अन्तर सैद्धान्तिक समाजशास्त्र के अध्ययन का मुख्य विषय है। ये दोनों मूलभूत अवधारणाएं हैं जो समाज के सामुदायिक से साहचर्यात्मक चरित्र में परिवर्तन में, अनुभवपरक और व्यावहारिक समाजशास्त्र को दिशा निर्देश प्रदान करती हैं। मैक्स वेबर की शब्दावली में यद्यपि ये आदर्श प्ररूप (आइडिअल टाईप्स) हैं, टॉनीज़ ने इन दोनों अवधारणाओं के जोड़ों को जर्मनी के ग्रामीण से औद्योगिक समाज में ऐतिहासिक फेर बदलाव के लिये प्रयोग किया है।

टॉनीज़ दार्शनिक **ए. शोपेनहार** (1788-1860) **और एफ.नीत्से** (1844-1900) के दर्शन से काफी प्रभावित थे। इन्हीं से उन्होंने 'जीवन के प्रति इच्छा' की धारणा को ग्रहण किया और कहा कि सामाजिक सम्बंध मानवीय इच्छा का प्रतिफल (उत्पत्ति) हैं। टॉनीज़ ने **दो प्रकार की इच्छाएं** बताई हैं, प्राकृतिक इच्छा और तार्किक इच्छा। प्राकृतिक इच्छा सहजवृतिमूलक जरूरतों, आदतों, आस्थाओं और प्रवृति की अभिव्यक्ति हैं, तार्किक इच्छा लक्ष्यों हेतु साधनों के चुनाव में साधनात्मक तार्किकता को परिलक्षित करती हैं। जहां प्राकृतिक इच्छा वास्तविक और जैविक होती है, वहां तार्किक इच्छा संकल्पनात्मक और कृत्रिम। इच्छा के ये स्वरूप समुदाय और समिति के बीच अन्तर से मिलते-जुलते हैं क्योंकि सामुदायिक जीवन प्राकृतिक इच्छा की अभिव्यक्ति है और सहचारी जीवन तार्किक इच्छा का प्रतिफल होती है।

Scanned with CamScanner